Impact Factor – 6.261 Special Issue - 131 Feb. 2019 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

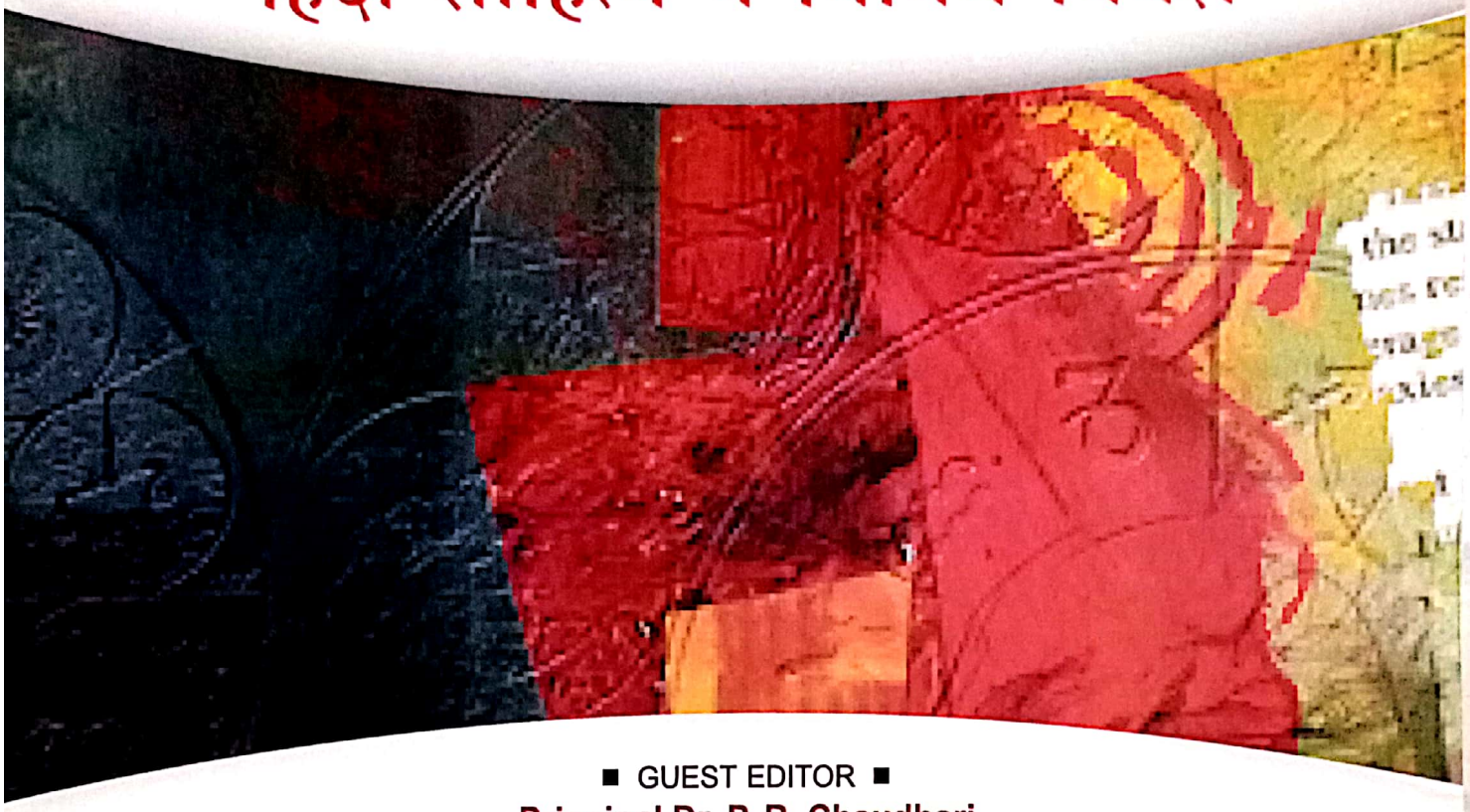

■ GUEST EDITOR ■

Principal Dr. P. R. Chaudhari

■ EXECUTIVE EDITOR ■

Dr. Vijay A. Sonje

■ ASSOCIATE EDITOR ■

Dr. Kalpana L. Patil

Dr. Ishwar P. Thakur

Dr. Satish D. Patil

■ CHIEF EDITOR ■

Mr. Dhanraj T. Dhangar

RESEARCH JOURNEY

MULTIDISCIPLINARY ONLINE RESEARCH JOURNAL

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with CamScanner

४४	'त्यागपत्र' उपन्यास में स्त्री-विमर्श हबीब खान	१००
४५	नारी विमर्श और समकालीन महिला कथाकार देवेन्द्रसिंह ठाकुर	१०२
४६	विमर्शों के दौर में हिन्दी कविता (दलित, स्त्री, आदिवासी विमर्श के विशेष संदर्भ में) डॉ. गजानन सुरेश वानखेडे	१०५
४७	आदिम कला 'ललमनियाँ' कहानी में स्त्री विमर्श प्रा.डॉ. लता नामदेव पेंडलवाड	१०९
४८	अंतिम दशक की हिंदी कविता में व्यक्त पारिवारिक विमर्श प्रा. अनिल बाबुलाल सूर्यवंशी	१११
४९	प्रभा खेतान के काव्य में चित्रित लैंगिक संवेदना डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा	११४
५०	समकालीन हिंदी गजल के विविध आयाम प्रा.डॉ. मुकेश दामोदर गायकवाड 'मुकेशराजे'	११८
५१	'सलाम आखिरी' उपन्यास में चित्रित वेश्या समस्या और समाधान प्रा. नटवर संपत तडवी	१२१
५२	आदिवासी भील्ल जनजाति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन प्रा. अंजीर नथ्थू भील	१२३
५३	डॉ. सुरेंद्र विक्रम के साहित्य में बालमनोवैज्ञानिकता का चित्रण डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर	१२५
५४	भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श प्रा.डॉ. मनोहर हिलाल पाटील	१२७
५५	आदिवासियों के शोषण का चित्रण करता दस्तावेज- 'पोस्टर' प्रा.डॉ. मनोज महाजन	१२९
५६	२१ वी सदी में हिंदी महिला उपन्यास लेखन प्रा.डॉ. मंजु पु. तरडेजा (सिंधाणी)	१३१
५७	'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में नारी विमर्श प्रा. माधुरी सुरेष ठाकरे	१३३
५८	निरूपमा सेवती के कहानियों में 'वृध्द विमर्श' डॉ. राहुल सुरेश भदाणे	१३५
५९	हिंदी ग़ज़लकारों की ग़ज़लों में नारी विमर्श डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील	१३७
६०	अवधी लोकगीतों में नारी जीवन के विविध आयाम प्रा. सौ. स्वाती व्ही. शेलार	१३९
६१	कृष्णा सोबती का उपन्यास 'दिलो दानिष' में अभिव्यक्त नारी-विमर्श डॉ. आशा दत्तात्रय कांबळे	१४१
६२	गीतांजलि श्री का उपन्यास 'रेत-समाधि' में वृद्ध विमर्श तायडे राजाराम बाबुराव	१४३
६३	धार्मिकता एवं सांस्कृतिकता से भरी मिथिलेश्वर की कहानियाँ डॉ. मनोज नामदेव पाटील	१४५
६४	भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में मुस्लिम स्त्री विमर्श प्रा. डिम्पल एस. पाटील	१४७
६५	अनामिका की कविताओं में स्त्री विमर्श डॉ. रेखा गाजरे, भावना बडगुजर	१५०

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261
Special Issue 131 : हिंदी साहित्य में विविध विमर्श
ISSN : 2348-7143
Feb. 2019

प्रभा खेतान के काव्य में चित्रित लैंगिक संवेदना

डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभागाध्यक्ष, कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल, जि. जलगाँव

सदियों से पुरूष नारी का यौन-शोषण एवं वह शोषित रही है। मध्यकाल में नारी का यौन शोषण अत्यधिक मात्रा में होने लगा। वे भोग्या बन गई एवं व्यक्ति से वस्तु बना दी गई फलस्वरूप उनकी खरीदी-बिक्री होने लगी। डॉ. अमरनाथ ने लिखा है कि मुसलमानों के सत्ता संभालते ही हिन्दुस्तान से नारियाँ पकड़-पकड़कर बाहर ले जाई जाने लगी और मध्य एशिया के बाजारों मे उनका क्रय-विक्रय होने लगा। हिन्दुस्तान के राजाओं ने यवन दासियाँ विशेष रूप से पसंद की। हिन्दुस्तानी बादशाह और सामंत देश-विदेश की खूबसूरत लड़कियों से अपने हरमों को सजाने लगे।१ इस युग से नारी पुरूष की व्यक्तिगत संपत्ति बना दी गई। भौतिकता के युग में पूँजीवादी व्यवस्था में स्त्री उपभोक्ता की वस्तु बन गयी। बाजारवाद के युग में वह यौन दृष्टि से देखी गयी। अरविंद जैन ने लिखा है कि - पितृसत्ता अभी भी घर में अपनी बहू-बेटियों को घूँघट या बुर्के में कैद रखना चाहती है। मगर घर के बाहर उसे बिकनीवाली सुंदरियाँ चाहिए जो उसके सेवा, उद्योग, मनोरंजन, व्यवसाय चला सके और रोज नए ब्रांड बेच सके।२ पुरूष मानसिकता में नारी का शरीर शोषण का प्राइम साईट रहा है। आज के बाजारवाद एव कार्पोरेट जगत में उसे विज्ञापन के लिए मॉडेल बनाकर देह प्रदर्शन के लिए विवश किया जाता है और धन के लोभ में कभी वह स्वयं इसे स्वीकारती है। अरविंद जैन ने लिखा है कि - पूंजी के स्वर्ग बाजार में 'औरत का गोष्त' सबसे सस्ता है। 'सेक्स सैरगाहो' में 'सेक्स शोज' या नग्न प्रदर्शन से लेकर हर प्रकार की यौन गुलामी के लिए विवश औरतों का वधस्थल बनते जा रहे है। वे स्वतंत्र बाजार, यौन रोग ही नहीं यौन हिंसा के आकड़े भी लगातार बढ़ रहे है। पूंजी के इस शर्मनाक खेल में औरत को भोग-उपभोग की 'सुंदर' वस्तु बनाया जा रहा है।३ इन सभी स्थितियों का साहित्यकारों ने चित्रण किया है।

नारी के हो रहे लैंगिक शोषण के संदर्भ में श्री. जगदीष्वर चतुर्वेदी सुधासिंह लिखते हैं कि, तब क्या औरत के संदर्भ में सारे निर्णय केवल उसकी देह से संबंधित है, देह पवित्र है या देह उच्छिष्ट...देह से बाहर औरत की कोई हस्ती नहीं।४ आज के युग में स्त्री को केवल हवसभरी दृष्टि से देखनेवाले लोगों की संख्या बढ़ रही है। इस संदर्भ में प्रभा ने पंछिन्नमस्ता की प्रिया की त्रासदी व्यक्त की है कि, प्रिया निरंतर शोषित होती रही है। समाज की जर-जर मान्यताओं से भी पुरूष की आदिम भूख से भी, टूट जाने की हद तक, लेकिन टूटती नहीं।५

नारी केवल देह नहीं उसका भी अपना एक अस्तित्व हैं। वह भी पुरूष की तरह प्रभा खेतान अपने काव्य संग्रह में स्त्री पर होनेवाले लैंगिक शोषण का अंकन किया है, समसामयिक युग में महिला साहित्यकारों ने यौन शोषण का बेबाक चित्रण किया हैं। आज की स्थिति में यथार्थवादिता के लिए इस तरह का चित्रण कविताओं में हुआ है।

नारी जिससे प्रेम करती है, उसको देह तक समर्पित करने का तत्पर रहती है। इसके बदले उसका प्रेमी यौन शोषण करके उसे दुत्कार देता हैं। उसे अंधेरी गलियों मे छोड़ देता है। 'अपरिचित उजाले' इस काव्य संग्रह की कविता 'मिलने को बढ़े हुए हाथ' में प्रभा लिखती हैं कि,

मित्र कहने को
खुले ओंठ
आँखों में तैरते हुए स्वप्नों को
नोच कर फेंक देना
हर मोड़ पर वापस। ६

सम्प्रति, प्रेम की परिभाषा ही बदल गई हैं। स्त्री-पुरूश के प्रेम का सच्चा रूप समाज व्यवस्था में दिखाई नहीं देता। आज का पुरूष इस्तेमाल करनेवाली वस्तुओं की तरह नारी को बहला-फुसलाकर उसे प्रेम के वादों में जकड लेता हैं। उसका लैंगिक शोषण करके जलती हुई सिगरेट की तरह जूते की नोक के नीचे मसल देता हैं। फिर भी अपने प्रेमी से प्रेमिका तहेदिल से प्रेम करती हैं। इसलिए उसके यौन शोषण में वह कुछ शेष नही रहना चाहती और समर्पित हो जाती हैं। प्रभा खेतान अपनी कविता 'तुम्हारे ओंठो पर' में लिखती हैं कि,

तुम्हारे ओंठोंपर जल रही है - सिगरेट
मेरा मन
अधजली तीलियों से
फिर से जला दो
जूते की नोंक के नीचे मसल दो
मैं सिर्फ 'होना' चाहती हूँ,
*शेष न रहने के लिए।*७

प्रेमी अपनी प्रेमिका से किसी पार्क, सिनेमा, रेस्तरों में मिलकर प्यार के वादे-कसमें खाता हैं। प्रेमिका से यौन संबंध साधता हैं। उसका मन प्रेमिका के प्रति कुछ अंतराल के बाद ऊबने लगता हैं। अब प्रेमी अपनी प्रेमिका और दूसरी लडकी में फर्क ढूँढने लगा हैं। उसकी हवस का शिकार हुई प्रेमिका फिर से दुत्कार दी जाती है। नारी छटपटाती हुई किसी अन्य की बाँहों में सुरक्षा खोजने लगती हैं। किन्तु फिर से उसे दुत्कार दिया जाता है। प्रभा अपनी कविता 'प्यार की तलाश में' लिखती हैं कि,

तुम एक लड़की से दूसरी लड़की का
फर्क ढूँढते हुए
मैं हर घेरनेवाली बाँह में
सुरक्षा खोजती हुई
अपने जिस्मों की खुली टकराहट में

Scanned with CamScanner

हम केवल दुहराया झूठ बोलते हैं। ८

व्यक्ति के जीवन में प्रेम एक भावनात्मक स्थिति है। प्रेम आँखों के माध्यम से व्यक्त होता है। प्रेम की पावनता सर्वमान्य है। इसे 'ढाई आखर' कहा गया है। प्रेमिका की भावना इस प्रकार व्यक्त होती है –

तुम्हारी प्रेम भरी आँखे
मुझे खोजती हुई
मेरी आँखों में विश्राम लेती है
और हम दोनों के बीच
ठहरा हुआ वक्त
बस एक तिनके की दूरी सा
थरथरा उठता है। ९

नारी प्रेमिका के रूप में प्रेमी की हर इच्छा–आकांक्षा को पूरा करने के लिए अपने आपको न्यौछावर कर देती हैं। समाज में उसका प्रेम कुछ पल के लिए हो रहता हैं। अपने प्रेमी की प्रतीक्षा में प्रेमिका विरह में तडपती रहती हैं। वह अपने प्रेमी की प्रतीक्षा में लगी रहती हैं कि, आज नहीं तो कल उसकी तलाश में उसका प्रेमी आयेगा। प्रभा खेतान अपनी कविता 'आखिर कब तक लटकी रहूँ' में लिखती हैं कि,

आखिर कब तक लटकी रहूँ
सारी-सारी शाम
सूखते कपडों-सी-बरामदे में
प्रतीक्षा करू तुम्हारे आने की
एक क्षण से
दूसरे क्षण तक। १०

प्रेमिका अपने प्रेमी के साथ यौन संबंध रखते हुए तन–मन–से समर्पित हो जाती हैं। परंतु प्रेमी के मन में प्रेमिका के प्रति सच्चा प्रेम नहीं रहता। वह उनके लिए उपयोग–उपभोग की वस्तु हो जाती है जैसे घर में पर्दे, सोफा, चादर, बिस्तर होता है। प्रेमिका अत्यंत व्यथित होकर कहती है –

मैं तुम्हारे गमले का फूल बनूँ
उगूँ तुम्हारी बरौनियों के सूरज को देख
तुम चाहते हो
मैं बनू तुम्हारे ड्राइंग–रूंम का कालीन
पर्दे, सोफा
या बैड–कवर
फैली रहूँ बिस्तर पर। ११

आज के बाजारवाद में वस्तुओं के प्प्रमोशनप के लिए उसकी देह के गठन, उभार का उपयोग किया जा रहा है उसे एक जड़ वस्तु में तब्दील कर दिया गया है जैसा कि कवयित्री ने 'नियति' कविता में लिखा है –

उसकी जिन्दगी
नियोन लाइट में
जगमगाता हुआ विज्ञापन
कुछ बनने के दौर में
वह जो बनकर
सामने आई
महज एक चीज। १२

प्रेमिका अपने प्रिय के प्रति मानसिक एवं देहिक स्तर पर सम्पृक्त हो चुकी है इसलिए प्रिय के पास खींची चली आती है –

मैं फिर तुम्हारे पास
लौट आई हूँ
नर्म बिस्तर की
पूरी गर्माहट लिए
मैं एक नयी उम्मीद बन
फिर लौट आई हूँ
पास। १३

जो स्त्री–पुरूष का नाता है वह जन्मों–जन्मों से चला आ रहा हैं। नारी इस नाते को जानते हुए अपने आपको प्रेमिका के रूप में पेश किया हैं। नारी प्रेमिका बनती है परंतु प्रेम के बदले केवल यौन शोषण ही मिला हैं। इस शोषण में वह केवल वस्तू के रूप में देखी जाती हैं। आज नारी भोग्या बन चुकी है। भोगवादी युग की सचाई भी यही है। नारी पुरूश की दासी, उसकी जूती बन गई है –

पहनाया तुम्हारे पाँवों में
जूती बन,
बिछी बिस्तरे पर

Scanned with CamScanner

चादर बन,
कभी टँगी खूँटी पर
तुम्हारा मुखौटा बन
मैं बनी वस्तु
तुम रहे भोक्ता। १४

कवयित्री ने 'मछली पकडने मछुए जाल फेंक रहे है कविता में' नारी को देखने की हवस दृष्टि का चित्रण किया है। जब मछुए मछलियाँ पकड़ने के लिए जा रहे है तब उन्हें यही किनारे पर औंधी पड़ी एक लड़की दिखाई देती है। यह स्थिति विदेशों में आम बात है। परंतु जब वह देखती है कि उसे देखनेवालों की आँखों में हवस, वासना है तब उसे नफरत होती है उन घूरनेवाली शिकारी आँखों से। अतएव वह अचानक पानी में कूद पड़ती है।

मछूआरे अब जाल डाल चुके हैं।
तैरती हुई मछलियों का जिस्म
भीगा हुआ है नमकीन पानी से।
यकायक वह लड़की
निकल आती...लहरों को चीरकर। १५

नारी दुनिया में रहनेवाले लोगों की नियत को जानती हैं। पुरूष-स्त्री में जो भेद पाया जाता हैं। उसमें से नारी ही केवल भोग्य वस्तू बन जाती है और पुरूष उसका भोग्ता बन जाता हैं। अन्य लोगों की तरह नारी भी आझाद हुई हैं। इसलिए अपनी आझाद जिंदगी में वह जीवन जीना चाहती हैं। पर पुरूश की सत्ता में नारी का केवल लैंगिक शोषण होता रहा हैं।

प्रभा खेतान ने 'कृष्णधर्मा मैं' कविता में नारी के कौमार्य, उसकी आत्मा के संदर्भ में यह प्रतिपादित किया है कि विवाह कन्या के कौमार्य को भंग करता है इसके बाद इस मायावी संसार में उसे वस्तु बनकर किमत चुकानी पड़ी है।

टूट गया कुआरापँन
वर्षो पहले शादी की पहली रात
पर आज भी कुँआरी है आत्मा
प्रतीक्षारत
हर अनुभव के लिए
परखती रही अनुभव
चुकाती रही कीमत
और होकर रह गई वस्तु।
पाने के बाद
आकर्षण समाप्त
एक ही शरीर
कभी रूंक्मिणी
कभी राधा। १६

कवयित्री ने पौराणिक मिथक के माध्यम से नारी के देहिक प्रदर्शन एवं शोषण को अभिव्यक्त किया है। सर्वविदित है कि महाभारत में द्रौपदी को जुए में दाँव पर लगाना उसे पण्य वस्तु बना देना था और उसके पश्चात उसका चीरहरण होने लगा परंतु कृष्ण ने बचा लिया परंतु आज की स्थिति यही है कि नारी का देहिक शोषण तो है परंतु कृष्ण नहीं है। औरत होने का अर्थ - असुरक्षित होना है। यह चौतरफा असुरक्षा है जिसके साथ औरत पैदा होती है और मर जाती है - आर्थिक, भावात्मक, शारीरिक। जब सुरक्षा के लिए लगाई बाड़ भी पौधे को खा जाती है तब हाट, बाट, घाट का जिक्र क्या।१७ द्रौपदी को भरी सभा में अपमानित, निवसा करना उसको अपमानित करना ही है। व्यथा यही है कि वह अपने ही स्वजनों द्वारा तिरस्कृत हुई है।

नहीं किया मैंने ऐसा कुछ भी
झेलती रही क्रमशः निरावरण होने की यातना
चबाती रही दुःख और अपमान का दर्द
बनती रही वासनाओं के खूनी स्वाद की खुराक। १८

नारी का यौन शोषण सनातन समस्या है। इन्द्र ने गौतम ऋषि की पत्नी के साथ यौन संबंध स्थापित किया वह भी धोखा देकर। प्रभा जी ने 'अहल्या' में लिखा है कि - 'क्या तुम अहल्या हो ? वही अहल्या, जो इन्द्र के मायाजाल में उलझ गई थी और उन्होंने शाप देकर तुम्हें पत्थर बना दिया।' -

पत्थरों का नग्न शरीर बना
गौतम ने किया
आदमियत का आखिरी अपमान। १९

इन्द्र ने अहल्या पर मोहित होकर जब गौतम भोर में नदी पर नहाने गये थे, देहिक शोषण किया था। इन्द्र के द्वारा नारी का अपमान है इस संदर्भ में कवयित्री ने लिखा है -

कौन था वह पुरूष, अहल्या,
जो लाँघकर सतीत्व की सीमा
कर गया नारीत्व का अपमान ?
क्या था तुम्हारी आँखों में

Scanned with CamScanner

इसके लिए,
जो डोल गया इन्द्रासन ?
बदल गया शरीर
नहीं पहचान सकी तुम
क्या दोष था तुम्हारा केवल। २०

अहल्या ने पुरूष के मायावी रूप को पहचाना नहीं। इन्द्र उसके साथ यौन संबंध बनाकर उसे अकेला ही छोंड़कर चला गया हैं। प्रभा अपनी कविता 'अहल्या' में लिखती है कि,

निष्पाप होती हुई तुम
कर दी गई प्रवंचित
भोक्ता के पलायन के बाद
समझ पायी तुम
पुरूष का मायावी रूप। २१

इन्द्र ने अपनी उद्दाम वासना को तृप्त करने के लिए 'अहल्या' को भोगा फलस्वरूप उसके पति गौतम ने उसे शाप देकर पत्थर बना दिया यह पुरूषों की प्रवृत्ति आज भी जारी है, विवाहिता अपने पर हुए अत्याचार के कारण आत्महत्या कर लेती है या जड़ बन जाती है। प्रभा खेतान इसी यथार्थ को व्यक्त करती है –

जानती हूँ पुरूषों की हिंस्र कामुकता
एक हा अहल्या से
तुष्ट नहीं होती है
आत्मा के सत्व को
जलाती इस आग से
मैं भी सहमती हूँ, अहल्या ! २२

प्रभा खेतान अपने काव्य संग्रहों की कविताओं में नारी के लैंगिक शोषण में स्त्री का प्रेमिका रूप, पुरूष का वासनाभरा रूप, पुरूष का मायावी रूप, प्रेमी से दुत्कार जाना आदि कई समस्याओं का चित्रण किया हैं। प्रभा नारी के प्रति आत्मीय सहानुभूति रखते हुए अपनी कविताओं में उनका हो रहा यौन शोषण, यौन पीड़ा, प्रेमी से दुत्कारी गई नारी, उनके अपमान और अत्याचार का वर्णन करती है। नारी का लैंगिक शोषण में प्रभा खेतान की कविताओं में लैंगिक शोषण में स्त्री का प्रेमिका रूप, नारी हवस का शिकार, अकेले जीवन व्यतीत करनेवाली स्त्री का यौन शोषण, पुरूष का वासना से भरा रूप, पुरूष का मायावी रूप, प्रेमी से दुत्कारी जाना आदि समस्याओं का अंकन किया हैं। प्रभा नारी के प्रति आत्मीय सहानुभूति रखते हुए अपनी कविताओं में उनका हो रहा यौन शोषण, यौन पीड़ा से त्रस्त नारी और प्रेमी से दुत्कारी गयी नारी के रूप का चित्रण पूरी प्रामाणिकता के साथ किया हैं।

प्रभा खेतान ने अपनी कविताओं में नारी की स्थिति में सदियों से चले आ रहे घर के बंधन पति द्वारा मिली पीड़ा में नारी के सपनों की टूटन, परिवार को संभालने में, उसकी त्रासदी में, वेदना, विवशता, पीड़ा, भय, परित्यक्ता को सहना, चुनौतियों का सामना करने में, आदमीयत की सत्ता आदि समस्याओं का अंकन किया हैं। प्रभा खेतान ने नारी की परिवार में जो स्थिति रही हैं उसके प्रति उनकी कविताओं में सहानुभूति को उभारा हैं। इस सहानुभूति को उन्होंने बड़ी मार्मिक ढंग से कविताओं में चित्रित किया हैं।

संदर्भ सूची

१) नारी मुक्ति संघर्ष – डॉ. अमरनाथ, पृ. ७५
२) औरत होने की सजा – अरविंद जैन, पृ. ३०
३) हंस – अरविंद जैन, मई १९९८, पृ. ९६
४) स्त्री अस्मिता साहित्य और विचारधारा – जगदीष्वर चतुर्वेदी, पृ. ३४७
५) छिन्नमस्ता – प्रभा खेतान, पृ. १४५
६) अपरिचित उजाले – प्रभा खेतान, पृ. ११
७) वही, पृ. १४
८) वही, पृ. १७
९) एक और आकाश की खोज मैं – प्रभा खेतान, पृ. ४
१०) अपरिचित उजाले – प्रभा खेतान, पृ. २१
११) वही, पृ. २५
१२) सीढ़ियाँ चढती हुई मैं – प्रभा खेतान, पृ. २६
१३) वही, पृ. ३५
१४) एक और आकाश की खोज में – प्रभा खेतान, पृ. ५
१५) वही, पृ. ३
१६) कृष्णधर्मा मैं – प्रभा खेतान, पृ. २६
१७) अस्मिता विमर्श का स्त्री स्वर – अर्चना वर्मा, पृ. १८७
१८) वही, पृ. २७
१९) अहल्या – प्रभा खेतान, पृ. २५
२०) वही, पृ. ३९
२१) वही, पृ. ३९
२२) वही, पृ. ७६

Scanned with CamScanner